Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-2, Issue-4, Continuous Issue-10, November - December 2021

सर्जक के रूप में रामधारी सिंह दिनकर

दिनकर काव्य की युगीन पृष्ठ्भूमि

दिनकर ने 'चक्रवाल' की भूमिका में लिखा है – "मेरी कविता के भीतर जो अनुभूतियाँ उतरी वे विशाल भारतीय जनता की अनुभूतियाँ थीं, वे उस काल की अनुभूतियाँ थीं जिसके अंक में बैठकर मैं रचना कर रहा था । कवि होने की सामर्थ्य मुझ में शायद नहीं थीं । यह क्षमता मुझ में भारत वर्ष का ध्यान रखने से जागृत हुई । यह शक्ति मुझ में भारतीय जनता की आकुलता को आत्मसात् करने से स्फुरित हुई ।" अन्यत्र वे लिखते हैं – "मैं तो काल का चारण हूँ और उसी के संकेत पर जीवन की टिप्पणियाँ लिखा करता हूँ ।

यहाँ पर देखना यह है कि, दिनकर जिस काल के 'संकेत पर जीवन की टिप्पणियाँ' लिखते हैं, उसकी परिस्थितियाँ क्या है ?

हम देखते हैं कि दिनकर सन् १९२२ के आसपास काव्य क्षेत्र में पर्दापण करते हैं । इस समय भारत की स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन चल रहा था । इस आन्दोलन के मुख्य चालक महात्मा गाँधी थे । गाँधीजी शान्तिपूर्ण ढंग से स्वराज्य चाहते थे; किन्तु युवकों का एक दल ऐसा भी था जिसके रक्त में नया उबाल था और जिसे 'सुधार समझौतों वाली ठठोली' (एक भारतीय आत्मा) पसन्द नहीं थे । इस दल के नेता पंडित जवाहरलाल नेहरु तथा सुभाषचंद्र बोझ थे । ये लोग चाहते थे कि स्वराज्य प्राप्ति जिस तरह से भी हो, होनी चाहिए; चाहे इसके लिए हिंसा के ही मार्ग का अवलम्बन करना क्यों न पड़ जाय । गाँधीजी हिंसावादी नीति के विरोधी थे, उनका अहिंसा में द्रढ विश्वास था और वे इसी के आधार पर स्वतन्त्रता प्राप्त करना चाहते थे । यह बात वामपंथी काँग्रेसी युवकों को बिल्कुल नहीं भाती थी ।

योगेश चेटर्जी के नेतृत्व में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एशोशियेशन के सदस्य बंगाल, बिहार तथा उतर प्रदेश में विध्वंसात्मक कार्यवाहियाँ कर रहे थे । ९ अगस्त, १९२४ को इस एशोशियेशन के सदस्यों ने काकोरी स्टेशन के समीप सरकारी खजाना लूट लिया । सुभाषचंद्र बोझ ने सन् १९२७ में एक नवयुवक समाज की स्थापना कर पूर्ण स्वतन्त्रता को अपना लक्ष्य घोषित कर दिया । सन् १९२७ में ही किसान-मजदूर दल की स्थापना हुई । बारडोली के किसानो ने भूमि कर से छूट पाने के लिए सरदार वल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में सरकार के विरूद्ध सत्याग्रह छेड़ दिया । मजदूरों ने भी बम्बई आदि विभिन्न स्थानों में लम्बी हड़तालें प्रारम्भ की ।

३ फरवरी, १९२८ को साइमन कमीशन का बहिष्कार किया गया । लाला लाजपतराय का इसी अवसर पर एक अंग्रेज अफसर की गोली से बलिदान हो गया । लाला जी की मृत्यु की प्रतिक्रिया स्वरूप पंजाब और बंगाळ में आतंकवादी दल फिर सक्रिय हो उठा । भगतसिंह और

उनके साथियों ने असेम्बली में बम केंका । लाला जी की मृत्यु के लिए जिस सहायक पुलिस सुपरिटेण्डेण्ट मिस्टर सांडर्स को उतरदायी समझा गया, उनकी हत्या कर दी गई ।

२६ जनवरी, १९३० के अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज्य' की प्राप्ति काँग्रेस का लक्ष्य घोषित कर दिया गया । क्रान्तिकारी सरकारी खजानों की लूटमार. विदेशी अफसरों की हत्या आदि विद्रोहात्मक कृत्यों में संलग्न थे । ब्रिटिश सरकार दमननीति पर उतारू थी, किन्तु क्रान्तिकारियों को ज्यों-ज्यों अधिक कष्ट दिये जा रहे थे, त्यों-त्यों देश के अन्दर विद्रोह की ज्वाला भड़्कती जा रही थी ।

इस प्रकार हम देखते हैं जिस समय दिनकर काव्य क्षेत्र में आये उन दिनों देश में विदेशियों के विरूद्ध अग्नि प्रज्वलित थी । सारे देशवासी जन्मभूमि की स्वतन्त्रता के लिए बलिदान होने को प्रस्तुत थे । दिनकर को पूरी सहानभूति इन क्रान्तिकारियों के साथ थी । इसीलिये उनकी आरम्भिक कृतियों 'रेणुका' और 'हुंकार' आदि में यही राष्ट्रभावना व्यक्त हुई है ।

सन् १९३८ में सुभाष बाबू काँग्रेस के प्रधान चुने गये । यहाँ उन्होंने द्धितीय महायुद्ध द्धारा मिले अवसर से पूरा पूरा लाभ उठाने की बात काँग्रेस के समक्ष रखी । यही कदाचित् प्रथम अवसर था जब नेहरु जी सुभाष बाबू से असहमत हुए । इसके बाद तो नेहरु जी गाँधीजी के ही पूर्ण अनुयायी हो गये ।

डॉ. पट्टाभि सीतारमैया को परजित करके सुभाष बाबू जब दूसरी बार काँग्रेस के अध्यक्ष बने तो गोविन्द वल्लभ पन्त ने बहुमत से यह प्रस्ताव पास कर दिया कि काँग्रेस में जो भी कार्य किया जाय वह गाँधीजी की सम्मति से । सुभाष बाबू को यह अच्छा न लगा और उन्होंने अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया । इसके बाद उन्होंने फार्वर्ड ब्लाक की स्थापना की । जनवरी १९४१ में वे अंग्रेजों की नजरबन्दी से भाग निकले और अफगानिस्तान, जर्मनी होते हुए जापान पहुँच गये । क्रान्तिकारी रासबिहारी बोझ 'आजाद हिन्द सेना' बना ही चुके थे । सुभाषचंद्र बोस के नेतृत्व में इस सेना ने और अंग्रेजो के छक्के छुड़ाये, किन्तु अंत में वह अपने उद्देश्य की प्राप्ति में असफल रही और बहुत से सेनानायक गिरफ्तार कर लिए गये । सन् १९४२ में ही 'भारत छोड़ो' आंदोलन से देश में एक क्रान्ति की लहर आ गई थी ।

दिनकर जी की 'सामघेनी' और 'कुरुक्षेत्र' में यही राजनीतिक पृष्ठभूमि बोल रही है ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद की जो रचनाएँ हैं, उनमें ऍसा लगता है कि दिनकर राष्ट्र-भावना के विरक्त हो गये हैं; किन्तु चीनी आक्रमळ के समय फिर उनका पौरुष जाग उठा और उन्होंने एक बार फिर 'परशुराम की प्रतिक्षा' जैसी राष्ट्रीयतावादी कृति हिन्दी साहित्य को दे दी ।

दिनकर का काव्य चेतना का क्रमिक विकास

दिनकर की प्रमुख काव्य कृतियों के नाम है – 'रेणुका', 'हुंकार', 'दन्दगीत', 'रसवंती', 'सामघेनी', 'कुरुक्षेत्र', 'बापू', 'धूप और धुआँ', 'रश्मिरथी', 'नील कुसुम', 'नये सुभाषित',

'उर्वशी' तथा 'परशुराम की प्रतिक्षा' । यहाँ पर इन सभी का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जायेगा ।

'रेणुका' – रेणुका दिनकर जी की आरम्भिक रचना है । इसीलिए उनका कवि इस कृतिमें अपने मार्ग की खोज में लगा दिखाई देता है । कभी वह राष्ट्रीयता की भावनाओं को अभिव्यक्ति देता है तो कभी छायावाद की ओर झुका दिखाई पड़ता है । इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि उसकी प्रवृति राष्ट्रीयता की ओर अधिक है । यदि रुपक के माध्यम से इसी बात को कहा जाय तो कहा जा सकता है कि रेणुका में उनकी स्थिति पूर्णतः स्पष्ट है – वहाँ अंगार के ऊपर की राख हट जाती है और वह अपने वास्तविक रूप में आ जाता है । यहाँ दिनकर यदि एक ओर छायावादी शैली के अनुरूप अपनी बंशी में 'अलि का गुनगुन' भरने की लालशा रखते हैं तो दूसरी ओर अपनी श्रुंगी के निवाद्र से सुप्त विश्व को जाग्रत भी कर देना चाहते हैं । दोनों का क्रम से एक-एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

"जलधि-सांस, पंछी के कलरव
अनिल-सनन, अलि का गुन गुन ।
मेरी बँशी के छिद्रों में
भर दे ये मधु स्वर चुन-चुन ।।"

"कर आदेश, फूंक दूँ श्रुंगी
उठे प्रभाती-राग महान् ।
तीनों काल ध्वनित हों स्वर में
जागें सुप्त भुवन के प्राण ।।"

वस्तुतः 'रेणुका' में कवि राष्ट्रीय भावनाओं की ओर ही अधिक झुका हुआ है । 'तांड़व', 'हिमालय' आदि कविताएँ असकी एसी प्रवृति का घोतन करती है ।

'हुंकार' – हुंकार में कवि की वाणी अत्यन्त ओज प्रदीप्त है । यहाँ उसका रवून भभक उठा है । यहाँ वह 'समर भूमि की चारण' के रूप में उपस्थित होता है । कहाँ तो 'रेणुका' का कवि अपनी बंशी में 'अलि का गुनगुन' भरना चाहता था. और कहाँ अब वही अपनी उसी बंशी में नई किरण की लूक उठाना चाहता है –

"नई किरण की सखी बाँसुरी के छिद्रों से लूक उठे ।
सांस-सांस पर खड्गधार पर नाच हृदय की हूक उठे ।।"

यहाँ कवि बलिदान की उद्दाम आकांक्षा लिए आग में कूद पड़ना चाहता है । 'असमय आहवान' नामक कविता में कवि एक निश्चित मार्ग पर आकर कह उठता कह उठता है –

"फेंकता हूँ लो तोड़-मरोड़
अरी निष्ठुरें । बीन के तार,

उठा चाँदी का उज्जवल शंख
फूँकता हूँ भैरव हूँकार ।
वेदना-मधु का भी कर पान
आज उगलूँगा गरल कराल ।।"

इस रचना में कहीं तो कवि भारत के वैभवपूर्ण अतीत की ओर उन्मुख होता है और कहीं वर्तमान की ओर । अतीत से उसे प्रेरणा मिलती है और वर्तमान के कटु सत्य को, जनता का कवि होने के कारण, भुला नहीं सकता । यहाँ कवि देश के युवकों को अमृत के बीज बोने का निमंत्रण देता है ।

'द्धंद्धगीत' – द्धंद्धगीत की कविताओं में जिस द्धंद्ध की अभिव्यक्ति हुई है वह किसी प्रकार का सामाजिक द्धंद्ध नहीं, वरन् दिनकर के अपने ही भावों का द्धंद्ध है । इसीलिए इन कविताओं में उनकी किसी विशिष्ट भावधारा का परिचय नहीं मिलता । "द्धंद्धगीत का द्धंद्ध, किसी काल-विशेष का द्धंद्ध नहीं, किसी समाज या व्यक्ति-विशेष का भी द्धंद्ध नहीं; वह शाश्वत द्धंद्ध है । दिनकर के हदय में बैठे हुए स्वच्छतावाद का जिज्ञासा रूप समय समय पर जोर मारता रहा है । द्धंद्धगीत समय समय पर लिखी गई उन्हीं पंक्तियों का एक संकलन मात्र है और इसीलिए द्धंद्ध तथा परस्पर विरोधी बातों को उपस्थित करने के अलावा उसमें कोई सामान्य भावधारा दृष्टिगोचर नहीं होती ।

'रसवंती' – रसवन्ती का कवि छायावाद की ओर झुका है । यहाँ प्रमुखतः व्यक्ति और प्रेम को प्राप्त हुई है । इसमें दिनकर देश की समस्याओं से पूर्णतः विरक्त दिखाई पडते हैं । इसकी रचना तब हुई जब १९४० में काँग्रेस का असहयोग आंदोलन चल रहा था और देश में भीषण नैराश्य एवं असन्तोष था; किन्तु रसवन्ती के कवि ने उधर आँख उठाकर नहीं देखा है, उसकी वृति यहाँ अर्न्तमुखी हो उठी है । कविता संकलन की भूमिका में दिनकर ने लिखा है – "कवि के नाते उसका यह भी कर्तव्य है कि वह अपनी कोमल भावनाओं की कैद में हत्या नहीं करे ।" रसवन्ती में उन्होंने यही किया है –

"पिया शैशव ने रस-पीयूष,
पिया यौवन ने मधु मकरंद;
तृषा प्राणों की पर हे देवि ।
एक पल कोन सकी हो बन्द ।"

'सामघेनी' – यधपि सामघेनी का प्रकाशन 'कुरुक्षेत्र' के बाद हुआ है तथापि उसमें जो कविताएँ संकलित है उनमें से अधिकांश कुरुक्षेत्र से पूर्व रची गई है । इन कविताओं की रचना मुख रूप से १९४१ तथा १९४६ के बीच हुई है । इस काव्य-संग्रह में ऐसा लगता है, जैसे दिनकर थक गये हैं । यहाँ वे अपनी आत्मा के साथ अन्याय कर बैठे हैं । 'वर्तमान का वैताली', 'ब्रिटेन की दासी' के संकट पर यहाँ गा रहा था । इस संकलन की कविताओं से ऐसा लगता है कि राष्ट्रीयता की हुंकार करने वाला कवि अवसरवादी बन गया है, वह कभी इधर है, कभी उधर,

वह कभी भारतीय नेताओं का प्रशस्ति गान करता है और कभी ब्रिटिश शासन की ओर झुकता दिखाई देता है ।

'कुरुक्षेत्र' – "कुरुक्षेत्र अतीत के कठोर और निश्चल कन्धे पर वर्तमान का डोलता हुआ विघणित मस्तक है । इसीलिए एक ओर जहाँ वह विचार काव्य बन गया, वहाँ दूसरी ओर उसकी पंक्ति पंक्ति से, एक ऐसे भावुक कवि का आन्तरिक रोदन फूट पड़ा, जिसके अश्रुओं में पत्थर को पिघला देने की क्षमता है और जिसकी वाणी में मुर्दो में भी पौरुष जगा देने वाला ओज है । उसका हदय, मस्तिष्क के स्तर पर चढ़कर बोला है, लेकिन अपने सर पर अपनी सम्पूर्ण भावनाओं की भारी पोटली रखकर ।"

कुरुक्षेत्र में दिनकर के समक्ष मुख्य समस्या युद्ध की है और इस पूरे काव्य में वे युधिष्ठिर तथा भीष्म के माध्यम से इसी समस्या के सुलझाने में लगे हैं । इस काव्य की पृष्ठभूमि द्वितीय महासमर है । इस महासमर के विध्वंसकारी दृश्य ने कवि को हिलाकर रख दिया । इसीलिए वह है तो शान्ति का ही समर्थक, किन्तु ऐसी शान्ति का नहीं जिसमें शोषितों पर अत्याचार करने में लगे हों और शोषित उनके विरुद्ध सिर न उठायें । कवि भीष्म के स्वरों में बोलता हुआ कहता है –

"समर निन्घ है धर्मराज, पर
कहो शान्ति वह क्या है ?
जो अनीति पर स्थित होकर भी
बनी हुई सरला है ।"

दिनकर की दृष्टि में युद्ध तब तक अनिवार्य है जब तक स्वार्थान्ध व्यक्ति दूसरों के रक्त शोषण से बाज नहीं आते ।

'बापू' – दिनकर का बापू कविता संकलन दो खंडों में विभक्त है । पहले खंड में कवि ने महात्मा गाँधी के महान् व्यक्तित्व को चित्रित करने का प्रयास किया है । उदाहरणार्थ कुछ पंक्तियाँ देखिये –

"सारे सम्बल के तीन खंड
दो वसन, एक सूखी लकड़ी,
सारी सेनाओं की प्रतीक
पीछे चलने वाली बकरी ।"

द्वितीय खंड की कविताओं में कवि ने अपनी उस वेदना को अभिव्यक्ति देनी चाही है जिसकी अनुभूति उसे बापू की हत्या के परिणामस्वरूप हुई है ।

'धूप और धुआँ' – इस कविता संकलन के विषय में प्रो.कामेश्वरनाथ शर्मा के शब्द है – 'धूप और धुआँ' की अधिकांश कविताएँ सामयिकता के हल्के कलापूर्ण संस्पर्शो से सप्राण है; थोड़ी-सी, अस्पष्टता और विशिष्ट शैली के कारण उस पंक्ति में खींच कर लायी जा सकती है

जिसे आजकल प्रयोगवादी नाम से अभिहित किया जाता है, और कतिपय अपने पुनरुक्ति दोष तथा शिथिल भावों के कारण निष्प्रयोजनता की सीमा तक पहुँच जाती है । कुल मिलाकर ३१ कविताओं के इस छोटे-से संग्रह में 'स्वराज्य से फूटने वाली आशा की धूप' ही अधिक है, 'उसके विरुद्ध जन्मे हुए (व्यापक) असंतोष का धुआँ' कम ।

इस संकलन की 'सपनों का धुआँ है', 'निराशावादी', 'भगवान् की बिक्री' आदि कविताओं में प्रयोगवादी कविता के सामान्य गुण मिल जायेंगे ।

'रश्मिरथी' – रश्मिरथी एक प्रबन्ध काव्य है, जिसमें उपेक्षित सूत पुत्र कर्ण के चरित्र के उद्धार का प्रयास है । स्वयं दिनकर का कथन है – 'कर्णचरित का उद्धार, एक तरह से नई मानवता की स्थापना का ही प्रयास है ।" यहाँ सबसे पहले विचारणीय यह है कि यह 'नई मानवता' है क्या ? हम देखते हैं कि व्यास भीष्म की विमाता सत्यवती के गर्भ से उनको कौमार्यावस्था में उत्पन्न हुए थे; किन्तु फिर भी उन्हें अपने छोटे भाइयों की मृत्यु के उपरान्त उनकी पत्नियों से संभोग करने की आज्ञा सत्यवती और भीष्म ने दी; किन्तु ठीक वैसी ही स्थिति में उत्पन्न होने पर कर्ण को जल में प्रवाहित कर दिया गया । थोड़े ही दिनों में समाज का रूप इतना विकृत हो गया था । यह विकृति इतनी बढ़ी कि उच्च कुल में जन्म लेने पर भी सूत पुत्र समझा जाने के कारण कर्ण राजपूतों के साथ युद्ध नहीं कर सकता था । रश्मिरथी में कर्ण इसी उपेक्षित एवं कलंकित मानवता का प्रतीक बनकर उपस्थित हुआ है । रश्मिरथी के सात सर्गों में से प्रत्येक सर्ग में कर्ण अपने को कम-से-कम एक बार अवश्य दलितों का नेता बता देता है । वह दास-प्रभु अर्जुन के प्रति प्रतिशोध भावना से जल रहा है ।

युद्ध में कौशल दिखाने पर जब कर्ण से उसका परिचय पूछा जाता है, तो वह बड़े ही क्षोभपूर्ण शब्दों में कहता है –

"सूतपुत्र हूँ मैं, लेकिन थे पिता पार्थ के कौन ?
हिम्मत हो तो कहो, शर्म से रह जाओ मत मौन ।
पूछो मेरी जाति, शक्ति हो तो, मेरे भुजबल से,
रवि-समान दीपित ललाट से, और कवच-कुंडल से ।"

इन पंक्तियों से वह सब स्पष्ट है जो दिनकर रश्मिरथी के माध्यम से कहना चाहते हैं ।

तृतीय सर्ग में दिनकर कर्ण को भगवान कृष्ण के मुख से 'नरता का महान भूषण' घोषित करा देते हैं। शेष सर्गों में भी कर्ण की शूरता, उदारता, दानशीलता, त्याग आदि उदात्त गुणों का वर्णन है ।

कर्ण को कवि ने जिस नयी मानवता का प्रतीक बनाना चाहा है, वह कर्ण के ही शब्दों में इस प्रकार है -

"मैं उनका आदर्श, कहीं जो व्यथा न खोल सकेंगे
पूछेगा जग, किन्तु, पिता का नाम न बोल सकेंगे
जिनका निखिल विश्व में कोई कहीं न अपना होगा,

मन में लिये उमंग जिन्हें चिर काल कलपना होगा ।
मैं उनका आदर्श, किन्तु, जो तनिक न घबराये
निज चरित्र-बल से समाज में पद विशिष्ट पायेंगे,
सिंहासन ही नहीं, स्वर्ग भी जिसे देख नत होगा,
धर्म-हेतु धन, धाम लुटा देना जिनका व्रत होगा ।"

'नील कुसुम' - इस कविता संकलन की कविताओं में कोई एक निश्चित विचार धारा परिलक्षित नहीं होती । कवि के मस्तिष्क तथा हृदय में समय समय पर उठने वाले विचारों तथा भावों की अभिव्यक्ति इन कविताओं में है। कुछ कविताएँ शान्तिवादी और मानवतावादी है, कुछ विचार प्रधान सामाजिक कविताएँ हैं । हिन्दी में व्यक्तिवादी विचारों को इनसे अभिव्यक्ति मिली है, कुछ कविताएँ जिज्ञासा प्रेरित दर्शन के विचारों से ओत-प्रोत है, किन्हीं में कल्पना की प्रधानता है तो किन्हीं में श्रृंगार की ।

'नये सुभाषित' - नये सुभाषित की कविताओं में वर्तमान व्यवस्थाओं की विषमताओं पर हल्के-फुल्के छींटे डाले गये हैं। "ये अवकाश के क्षणों की रचनाएँ हैं। अनेक सुभाषित पर विदेशी साहित्य का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव मिलता है । विषय की विविधता का अनुमान तो उनकी संख्या से ही लगाया जा सकता है। एक ओर प्रेम, सौन्दर्य, यौवन और विवाह सम्बन्धी फुलझड़ियाँ है तो दूसरी ओर पत्रकार, अभिनेता, आलोचक और कवियों की रगड़ाई हुई है, कुछ सुभाषितों में धर्म, नीति, दर्शन, राजनीति और संस्कृति की गंभीर और मार्मिक झलकियाँ हैं, तो कुछ में आँख, कान, आलस्य, मूर्ख और क्वारों का मुक्त और हास्यपूर्ण विश्लेषण है। अध्ययन, विज्ञान, साहस, तथ्य और सत्य, भूल, अनुभव, विकास, नाटक इत्यादि विषयों से सम्बद्ध कणिकायें दिनकर की वाग्विदग्धता की परिचायक है। "

'उर्वशी' - दिनकर का उर्वशी प्रबन्ध काव्य समस्या प्रधान है । डॉ.सावित्री सिन्हा ने इसकी समस्या पर प्रकाश डालते हुए लिखा है "उसकी (उर्वशी) की रचना का उद्देश्य कुछ वैसा नहीं है जैसा द्विवेदीयुगीन प्रबन्ध काव्यों का था । न तो कवि उर्वशी और पुरुरवा की मार्मिक और आकर्षक कथा में मौलिक उदभावनाओं का स्पर्श देकर उसे नये रूप में प्रस्तुत करना चाहता है न पौराणिक पात्रों के माध्यम से युगधर्म की स्थापना करना चाहता है और न वह किसी उपेक्षित, अनाहत अथवा विस्मृत पात्र का उद्धार करना चाहता है। 'रश्मिरथी' के दिनकर का जो उद्देश्य था, वही उद्देश्य उर्वशी के दिनकर का नहीं हैं। यहाँ तो उनके सामने एक समस्या है। काम अथवा प्रेम की समस्या और दर्शन तथा मनोविज्ञान के द्वारा इस समस्या का उद्घाटन उर्वशी के कवि का उद्देश्य रहा है। "

पुरुरवा के चरित्र में जो द्धंद्ध चित्रित हुआ है वह आज के व्यक्ति का द्धंद्ध हैं। उनका द्धंद्ध किसी आदर्शवादी गृहस्थ निबन्ध भोगवादी अथवा अध्यात्म की ओर झुकते हुए व्यक्ति का द्धंद्ध नहीं है, वह तो उस युग के व्यक्ति का द्धंद्ध है। जिसके सामने

मर्यादा की रक्षा और प्रवृत्तियों की अभिव्यक्ति के प्रलोभन में सतत रूप से संघर्ष चलता रहता है। पुरुरवा आज के युग का भारतीय पुरुष है, जो संस्कारवंश चिन्तन आस्वाद को न तो सर्वथा अस्वीकार कर मृण्मय आस्वाद के अमिश्र रस का भोग कर सकता है और न अपने पूर्वजों की भाँति मृण्यमय अनुभूति का सहज त्याग कर चिन्मय अनुभूति में लीन हो सकता है। आज के व्यक्ति की भौतिक दृष्टि और कामासक्ति चाहे उसे प्रगाढ़ सुख दे सकती हो पर शान्ति नहीं दे सकती। वर्तमान युग के इसी व्यक्ति के अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण और निरूपण उर्वशी में हुआ है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि उर्वशी में वर्तमान युग को उलझनपूर्ण वैयक्तिक समस्याएँ और तत्सम्बन्धी दिनकर की अपनी मान्यताएँ व्यक्त हुई है ।

'परशुराम की प्रतिक्षा' - परशुराम की प्रतिक्षा की रचना चीन द्वारा भारत पर आक्रमण की प्रतिक्रिया स्वरूप हुई है, साथ ही इसमें भारतवर्ष की राजनीति और जीवन दर्शन के अनुदित गिरते हुए स्तर के कारणों का अध्ययन, मनन और विवेचन भी किया गया है। यहाँ दिनकर जनता का प्रतिनिधित्व करते जान पड़ रहे हैं । कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर ने १४ जुलाई, १९६३ के 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान में लिखा था “परशुराम के छन्दों का भाव है जन-मन का, पर प्रभाव है कवि का, तो भाव को प्रभाव देकर दिनकर जनमानस के कवि का इतिहास पद पा गये हैं। अब से ठीक ५१ वर्ष पूर्व जन जन की भावना को छन्दबद्ध किया था कवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत भारती' में, और इतिहास पद पाया था।..... आँखें खोलता, अंगडाई लेता जन जन भारत भारती है, तो आँखें तरेस्ता, मुट्ठी बांधता क्रुद्ध जन मन परशुराम की प्रतीक्षा है। "

यहाँ दिनकर की हुंकारमयी वाणी सुनायी पड़ती है -
"पर्वतपति को आमूल डोलना होगा,
शंकर को ध्वंसक नयन खोलना होगा ।
गौतम को जयजयकार बोलना होगा।"
इस कविता में कवि का विश्वास भरा गर्जन है ।

अतः कह सकते हैं कि -

(1) दिनकर 'काल के चारण है इसीलिए उनके काव्य में जन मन को वाणी मिलना स्वाभाविक ही था जनता के सुख-दुःख, आशा-निराशा आदि का सुन्दर चित्रण उनके काव्य में हुआ है।

(2) दिनकर-काव्य के अधिकांश का सर्जन उस समय हुआ है जब देश परतंत्र था और स्वातंत्र्य प्राप्ति के लिए भारत में जोरों का आन्दोलन चल रहा था। यही कारण है उनके काव्य में राष्ट्रीयता की भावना की प्रधानता है । अपनी अनेक कविताओं में उन्होंने जनता का गर्जनमयी वाणी से आह्वान किया है ।

(3) दिनकर ने जहाँ राष्ट्रीयता के गीत गाये हैं, वहीं वे मानव-मन की मूलभूत प्रवृत्ति काम की भी उपेक्षा नहीं कर सके हैं। इसी कारण 'रसवन्ती' और 'उर्वशी' में श्रृंगार के चित्र भी मिल जाते हैं ।

गीता, गाँधी, रवीन्द्र, वट्राँड रसेल, टाल्स्टॉय आदि की विचारधारा से कवि प्रभावित हुआ है और उसकी अभिव्यक्ति उसके काव्य में यत्र-तत्र हुई है।

(4) जिन भारतीय नेताओं से दिनकर के विचारों का तालमेल नहीं बैठा है, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, उनकी छीछालेदर करने में भी दिनकर नहीं चूके हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत विवेचन के निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि दिनकर जी माँ भारती के मन्दिर के ऐसे अमर गायक हैं, जिनकी समाज को सदैव आवश्यकता रहेगी। उन्होंने अपने अमर गायन से देश की सोती हुई जनता को जगाया है देशवासी अपनी जन्मभूमि की वेदी पर हँसते हँसते अपने प्राणों का विसर्जन करें और देश को गौरवान्वित बनायें। दिनकर जी का काव्य राष्ट्रीयतापरक काव्य में एक अत्यन्त उच्च स्थान का अधिकारी है ।

प्रा. डॉ. महेश एम. पटेल
श्री जे. बी. धारूकावाला महिला
आर्ट्स कॉलेज,
वराछा रोड, सूरत.
(M) 99987 40074